सिल्वर वेडिंग

–मनोहर श्याम जोशी

जब सेक्शन ऑफिसर वाई.डी. (यशोधर) पन्त ने आखिरी फाइल का लाल फीता बाँधकर निगाह मेज से उठाई तब दफ्तर की पुरानी दीवार घड़ी पाँच बजकर पच्चीस मिनट बजा रही थी। उनकी अपनी कलाई घड़ी में साढ़े पाँच बजे थे। पन्त जी ने अपनी घड़ी रोजाना सुबह-शाम रेडियों समाचारों से मिलाते हैं, इसलिए उन्होंने दफ्तर की घड़ी को ही सुस्त ठहराया। फाइल आउट ट्रे में डालकर उन्होंने 'दिन के दस' के बंधे हुए राशन में से सातवीं सिगरेट सुलगाई और एक निगाह अपने मातहतों पर डाली जो उनके ही कारण पाँच बजे के बाद भी दफ्तर में बैठने को मजबूर होते हैं। चलते-चलते जूनियरों से कोई मनोरंजक बात कहकर दिन-भर के शुष्क व्यवहार का निराकरण कर जाने की कृष्णानन्द (किशन दा) पाण्डे से मिली हुई परम्परा का पालन करते हुए उन्होंने कहा, ''आप लोगों की देखा-देखी सेक्शन की घड़ी भी सुस्त हो गई है।''

सीधे 'असिस्टेण्ट ग्रेड' में आए नये छोकरे चड्ढा ने, जिसकी चौड़ी मोहरी वाली पतलून और ऊँची एड़ी वाले जूते पन्त जी को 'समहाउ इम्प्रॉपर' मालूम होते हैं, थोड़ी बदतमीजी-सी की। 'ऐज यूजुअल' बोला, ''बड़े बाऊ, आपकी अपनी चूनेदानी का क्या हाल है? वक्त सही देती है?''

पन्त जी ने चड्ढा की धृष्टता को अनदेखा किया और कहा, ''मिनिट टु मिनिट करेक्ट चलती है।''

चड्ढा ने कुछ और धृष्ट होकर पन्त जी की कलाई थाम ली। इस तरह का धृष्टता

का प्रबल विरोध करना यशोधर बाबू ने छोड़ दिया है। मन-ही-मन वह उस जामने की याद जरूर करते हैं जब दफ्तर में किशन दा को भाई नहीं 'साहब' कहते और समझते थे। घड़ी की ओर देखकर कहा, ''बाबा आदम के जमाने की है बड़े बाऊ यह तो! आप तो डिजिटल ले लो एक। जापानी। 'स्मगल्ड' ! सस्ती मिल जाती है।''

''यह घड़ी मुझे शादी में मिली थी। हम पुरानी चाल के, हमारी घड़ी पुरानी चाल की। अरे, यही बहुत है कि अब तक 'राइट टाइम' चल रही है-क्यों, कैसी रही?''

इस तरह का नहले पर दहला जवाब देते हुए एक हाथ आगे बढ़ा देने की परम्परा थी, रेम्जी स्कूल अल्मोड़ा में, जहाँ से कभी यशोधर बाबू ने मैट्रिक की परीक्षा पास की थी। इस तरह के आगे बढ़े हुए हाथ पर सुनने वाला बतौर दाद अपना हाथ मारा करता था और वक्ता-श्रोता दोनों ठठाकर हाथ मिलाया करते थे। ऐसी ही परम्परा किशन दा के क्वार्टर में थी जहाँ रोजी-रोटी की तलाश में आए यशोधर पन्त नामक एक मैट्रिक पास बालक को शरण मिली थी कभी। किशन दा कुँआरे थे और पहाड़ से आए हुए कितने ही लड़के ठीक-ठिकाना होने से पहले उनके यहाँ रह जाते थे। मैस जैसी थी। मिलकर लाओ, पकाओ, खाओ। यशोधर बाबू जिस समय दिल्ली आए थे उनकी उम्र सरकारी नौकरी के लिए कम थी। कोशिश करने पर भी 'बॉय सर्विस में वह नहीं लगाए जा सके। तब किशन दा ने उन्हें मैस का रसोइया बनाकर रख लिया। यही नहीं, उन्होंने यशोधर को पचास रुपये उधार भी दिए कि वह अपने लिए कपड़े बना सके और गाँव पैसा भेज सके। बाद में इन्हीं किशन दा ने अपने ही नीचे नौकरी दिलवाई और दफ्तरी जीवन में मार्गदर्शन किया।

चड्ढा ने जोर से कहा, ''बड़े बाऊ, आप किन ख्यालों में खो गए? मेनन पूछ रहा है कि आपकी शादी हुई कब थी?''

यशोधर बाबू ने सकपकाकर अपना बढ़ा हुआ हाथ वापस खींचा और मेनन से मुखातिब होकर बोले, ''नाव लैट मी सी, आई वाज मैरिड ऑन सिक्स्थ फरवरी नाइंटीन फोर्टी सेवन।''

मेनन ने फौरन हिसाब लगाया और चहककर बोला, ''मैनी हैप्पी रिटर्न्स ऑफ द डे सर! आज तो आपका 'सिल्वर वेडिंग' है। शादी को पूरा पच्चीस साल हो गया।''

यशोधर जी खुश होते हुए झेंपे और झेंपते हुए खुश हुए। यह अदा उन्होंने किशन दा से सीखी थी। चड्ढा ने घण्टी बजाकर चपरासी को बुलाया और कहा, ''सुन भई भगवानदास, बड़े बाऊ से बड़ा नोट ले और सारे सेक्शन के लिए चाय-पानी का

इन्तजाम कर फटाफट।''

यशोधर जी बोले, ''अरे ये वेडिंग एनिवर्सरी वगैरह सब गोरे साहबों के चोंचले हैं–हमारे यहाँ जो थोड़ी मानते हैं।''

चड्ढा बोला, ''मिक्सचर मत पिलाइए गुरुदेव! चाय–मट्ठी–लड्डू बस इतना ही तो सौदा है। इनमें कौन आपकी बड़ी माया निकली जानी है।''

यशोधर बाबू ने जेब से बटुआ और बटुये से दस का नोट निकाला और कहा, ''आप लोग चाय पीजिए। 'दैट' तो 'आई डू नॉट माइण्ड' लेकिन जो हमारे लोगों में 'कस्टम' नहीं है, उस पर 'इनसिस्ट' करना, 'दैट' मैं 'समहाउ इम्प्रॉपर फाइण्ड' करता हूँ।''

चड्ढा ने दस का नोट चपरासी को दिया और पुनः बड़े बाऊ के आगे हाथ फैला दिया कि एक नोट से सेक्शन का क्या बनना है? रुपया तीस हों तो चुग्गे–भर का जुगाड़ करा सकें।

सारा सेक्शन जानता है कि यशोधर बाबू अपने बटुये में सौ–डेढ़ सौ रुपये हमेशा रखते हैं, भले ही उनका दैनिक खर्च नगण्य है। और तो और, बस–टिकट का खर्च भी नहीं। गोल मार्केट से 'सेक्रेटरिएट' तक पहले साइकिल से आते–जाते थे। इधर पैदल आने–जाने लगे हैं क्योंकि उनके बच्चे आधुनिक युवा हो चले हैं और उन्हें अपने पिता का साइकिल–सवार होना सख्त नागवार गुजरता है। बच्चों के अनुसार साइकिल तो चपरासी चलाते हैं। बच्चे चाहते हैं कि पिता जी स्कूटर ले लें। लेकिन पिता जी को 'समाहउ' स्कूटर निहायत बेहूदा सवारी मालूम होती है और कार जब 'अफोर्ड' की ही नहीं जा सकती तब उसकी बात सोचना ही क्यों?

चड्ढा के जोर देने पर बड़े बाऊ ने दस–दस के दो नोट और दे दिए लेकिन सारे सेक्शन के इसरार करने पर भी वह अपनी 'सिल्वर वेडिंग' की इस दावत के लिए रुके नहीं। मातहत लोगों के चलते–चलते थोड़ा हँसी–मजाक कर लेना किशन दा की परम्परा में है। उनके साथ बैठकर चाय–पानी और गप्प–गप्पाष्टक में वक्त बरबाद करना उस परम्परा के विरुद्ध है।

इधर यशोधर बाबू ने दफ्तर से लौटते हुए रोज बिड़ला मन्दिर जाने और उसके उद्यान में बैठकर प्रवचन सुनने अथवा स्वयं ही प्रभु का ध्यान लगाने की नयी रीत अपनाई है। यह बात उनके पत्नी–बच्चों को बहुत अखरती है। ''बब्बा, आप कोई बुड्ढे थोड़े हैं जो रोज–रोज मन्दिर जाएँ, इतने ज्यादा व्रत करें।'' ऐसा कहते हैं वे। यशोधर

बाबू इस आलोचना को अनसुना कर देते हैं। सिद्धान्त के धनी की , किशन दा के अनुसार, वही निशानी है।

बिड़ला मन्दिर से उठकर यशोधर बाबू पहाड़गंज जाते हैं और घर के लिए साग–सब्जी खरीद लाते हैं। अगर किसी से मिलना–मिलाना हो तो वह भी इसी समय कर लेते हैं। तो भले ही दफ्तर पाँच बजे छूटता हो, वह घर आठ बजे से पहले कभी नहीं पहुँते।

आज बिड़ला मन्दिर जाते हुए यशोधर बाबू की निगाह उस अहाते पर पड़ी जिसमें कभी किशन दा का तीन बेडरूम वाला बड़ा क्वार्टर हुआ करता था और जिस पर इन दिनों एक छह मंजिला इमारत बनाई जा रही है। इधर से गुजरते हुए, कभी के 'डी.आई.जेड.' एरिया की बदलती शक्ल देखकर यशोधर बाबू को बुरा–सा लगता है। ये लोग सारा गोल मार्केट क्षेत्र तोड़कर यहाँ एक मंजिला क्वार्टरों की जगह ऊँची इमारतें बना रहे हैं। यशोधर बाबू को पता नहीं कि ये लोग ठीक कर रहे हैं कि गलत कर रहे हैं। उन्हें यह जरूर पता है कि उनकी यादों के गोल मार्केट के ढहाए जाने का गम मनाने के लिए उनका इस क्षेत्र में डटे रहना निहायत जरूरी है। उन्हें एण्ड्रयूजगंज, लक्ष्मीबाई नगर, पण्डारा रोड आदि नई बस्तियों में पद की गरिमा के अनुरूप डी–2 टाइप क्वार्टर मिलने की अच्छी खबर कई बार आई है, मगर हर बार उन्होंने गोल मार्केट छोड़ने से इन्कार कर दिया है। जब उनका क्वार्टर टूटने का नम्बर आया तब भी उन्हें इसी क्षेत्र की इन बस्तियों में बचे हुए क्वार्टरों में एक अपने नाम अलॉट करा लिया। पत्नी के यह पूछने पर कि जब यह भी टूट जाएगा तब क्या करोगे? उन्होंने कहा–तब की तब देखी जाएगी। कहा और उसी तरह मुस्कराए जिस तरह किशन दा यही फिकरा कहकर मुस्कराते थे।

सच तो यह है कि पिछले कई वर्षों से यशोधर बाबू का अपनी पत्नी और बच्चों से हर छोटी–बड़ी बात में मतभेद होने लगा है और इसी वजह से वह घर जल्दी लौटना पसन्द नहीं करते। जब तक बच्चे छोटे थे तब तक वह उनकी पढ़ाई–लिखाई में मदद कर सकते थे। अब बड़ा लड़का एक प्रमुख विज्ञापन संस्था में नौकरी पा गया है। यद्यपि 'समहाउ' यशोधर बाबू को अपने साधारण पुत्र को असाधारण वेतन देने वाली यह नौकरी कुछ समझ में आती नहीं। वह कहते हैं कि डेढ़ हजार रुपया तो हमें अब 'रिटायरमेण्ट' के पास पहुँचकर मिला है, शुरू में ही डेढ़ हजार रुपया देने वाली इस नौकरी में जरूर कुछ पेच होगा। यशोधर जी का दूसरा बेटा दूसरी बार आई.ए.एस. देने की तैयारी कर रहा है और यशोधर बाबू के लिए यह समझ सकता असम्भव है कि

अब यह पिछले साल 'एलोइड सर्विसेज' की सूची में, माना काफी नीचे आ गया था तब इसने 'ज्वाइन' क रने से इन्कार कर दिया? उनका तीसरा बेटा 'स्कॉलरशिप' लेकर अमरीका चला गया है और उनकी एकमात्र बेटी ने केवल तमाम प्रस्तावित वर अस्वीकार करती चली जा रही है बल्कि डॉक्टरी की उच्चतम शिक्षा के लिए स्वयं भी अमरीका चले जाने की धमकी दे रही है। यशोधर बाबू जहाँ बच्चों की इस तरक्की से खुश होते हैं वहाँ 'समहाउ' यह भी अनुभव करते हैं कि वह खुशहाली भी कैसी जो अपनों में परायापन पैदा करे। अपने बच्चों द्वारा गरीब रिश्तेदारों की उपेक्षा उन्हें 'समहाउ' जँचती नहीं। 'एनीवे-जनरेशनों' में गैप तो होता ही है सुना-ऐसा कहकर स्वयं को दिलासा देता है पिता।

यद्यपि यशोधर बाबू की पत्नी अपने मूल संस्कारों से किसी भी तरह आधुनिका नहीं है, तथापि बच्चों की तरफदारी करने की मातृसुलभ मजबूरी ने उन्हें भी 'मॉड' बना डाला है। कुछ यह भी है कि जिस समय उनकी शादी हुई थी। यशोधर बाबू के साथ गाँव से आए ताऊ जी और उनके दो विवाहित बेटे भी रहा करते थे। इस संयुक्त परिवार में पीछे ही पीछे बहुओं में गजब के तनाव थे लेकिन ताऊ जी के डर से कोई कुछ कह नहीं पाता था। यशोधर बाबू की पत्नी को शिकायत है कि संयुक्त परिवार वाले उस दौर में पति ने हमारा पक्ष कभी नहीं लिया, बस जिठानियों की चलने दी। उनका यह भी कहना है कि मुझे आचार-व्यवहार के ऐसे बन्धनों में रखा गया मानो मैं जवान औरत नहीं, बुढ़िया थी। जिनते भी नियम इसकी बुढ़िया ताई के लिए थे, वे सब मुझ पर भी लागू करवाए-ऐसा कहती है घरवाली बच्चों से। बच्चे उससे सहानुभूति व्यक्त करते हैं। फिर वह यशोधर जी से उनमुख होकर कहती है-''तुम्हारी ये बाबा आदम के जमाने की बातें मेरे बच्चे नहीं मानते तो इसमें उनका कोई कसूर नहीं। मैं भी इन बातों को उसी हद तक मानूँगी जिस हद तक सुभीता हो। अब अब मेरे कहने से वह सब ढोंग-ढकोसला हो नहीं सकता-साफ बात।''

धर्म-कर्म, कुल-परम्परा सबको ढोंग-ढकोसला कहकर घरवाली आधुनिकाओं-सा आचरण करती है तो यशोधर बाबू 'शानियल बुढ़िया, चटाई का लहँगा' या 'बूढ़ी मुँह मुँहासे, लोक करें तमाशे' कहकर उसके विद्रोह को मजाक में उड़ा देना चाहते हैं, अनदेखा कर देना चाहते हैं, लेकिन यह स्वीकार करने को बाध्य भी होते जाते हैं कि तमाशा स्वयं उनका बन रहा है।

जिस जगह किशनदा का एक क्वार्टर था उसके सामने खड़े होकर एक गहरा निःश्वास छोड़ते हुए यशोधर जी ने अपने से पूछा कि यह 'बेटर' नहीं रहता कि किशन

दा की तरह घर-गृहस्थी का बवाल ही न पाला होता और 'लाइफ-कम्युनिटी' के लिए 'डेडीकेट' कर दी होती।

फिर उनका ध्यान इस ओर गया कि बाल-जती किशन दा का बुढ़ापा सुखी नहीं रहा। उसके तमात साथियों ने हौजखास, ग्रीन पार्क, कैलाश कॉलोनी कहीं-न-कहीं जमीन ली, मकान बनवाया, लेकिन उसने कभी इस ओर ध्यान ही नहीं दिया। रिटायर होने के छह महीने बाद जब उसे क्वार्टर खाली करना पड़ा, तब हद हो गई, उसके द्वारा उपकृत इतने सारे लोगों में से एक ने भी उसे अपने यहां रखने की पेशकश नहीं की। स्वयं यशोधर बाबू उसके सामने ऐसा कोई प्रस्ताव नहीं रख पाए क्योंकि उस समय तक उनकी शादी हो चुकी थी और उनके दो कमरों के क्वार्टर में तीन परिवार रहा करते थे। किशन दा कुछ साल राजेन्द्रनगर में किराये का क्वार्टर लेकर रहा और फिर अपने गाँव लौट गया जहाँ साल-भर बाद उसकी मृत्यु हो गई।

ज्यादा पेंशन खा नहीं सका बेचारा! विचित्र बात यह है कि उसे कोई भी बीमारी नहीं हुई। बस, रिटायर होने के बाद मुरझाता-सूखता ही चला गया। जब उसके एक बिरादर से मृत्यु का कारण पूछा तब उसने यशोधर बाबू को यही जवाब दिया, ''जो हुआ होगा।'' 'यानी' पता नहीं क्यों हुआ!'

जिन लोगों के बाल-बच्चे नहीं होते, घर-परिवार नहीं होता उनकी रिटायर होने के बाद 'जो हुआ होगा' से भी मौत हो जाती है-यह जानते हैं यशोधर जी। बच्चों का होना भी जरूरी है। यह सही है कि यशोधर जी के बच्चे मनमानी कर रहे हैं और ऐसा संकेत दे रहे हैं कि उनके कारण यशोधर जी को बुढ़ापे में कोई विशेष सुख प्राप्त नहीं होगा, लेकिन यशोधर जी अपने मर्यादा-पुरुष किशन दा से सुनी हुई यह बात नहीं भूले हैं कि गधा-पच्चीसी में कोई क्या करता है, इसकी चिन्ता नहीं करनी चाहिए क्योंकि बाद में हर आदमी समझदार हो जाता है। यद्यपि युवा यशोधर को विश्वास नहीं होता तथापि किशन दा बताते हैं कि किस तरह मैंने जवानी में पचासों किस्म की खुराफात की हैं। ककड़ी चुराना, गर्दन मोड़ के मुर्गी मार देना, पीछे की खिड़की से कूदकर 'सेकण्ड शो' सिनेमा देख आना-कौन करम ऐसा है जो तुम्हारे इस किशन दा ने नहीं कर रखा।

जिम्मेदारी सिर पर पड़ेगी तब सब अपने-आप ठीक हो जाएँगे, यह भी किशन दा से विरासत में मिला हुआ एक फिकरा है जिसे यशोधर बाबू अक्सर अपने बच्चों के प्रसंग में दोहराते हैं। उन्हें कभी-कभी लगता है कि अगर मेरे पिता तब नहीं गुजरे होते जब मैं मैट्रिक में था तो शायद मैं भी गधा-पच्चीसी के लम्बे दौर से गुजरता। जिम्मेदारी सिर पर जल्दी पड़ गई तो जल्दी ही जिम्मेदार आदमी भी बन गया। जब तक बाप है

तब तक मौज कर ले। यह बात यशोधर जी कभी-कभी तंजिया कहते हैं। लेकिन कहते हुए उनके चेहरे पर जो मुस्कान खेल जाती है वह बच्चों पर यह प्रकट करती है कि बाप को उनका सनाथ होना, गैरजिम्मेदाराना होना, कुल मिलाकर अच्छा लगता है।

यशोधर बाबू कभी-कभी मन-ही-मन स्वीकार करते हैं कि दुनियादारी में बीवी-बच्चे उनसे अधिक सुलझे हुए हो सकते हैं, लेकिन दो के चार करने वाली दुनिया ही उन्हें कहाँ मंजूर है जो उसकी रीति मंजूर करे। दुनियादारी के हिसाब से बच्चों का यह कहना सही हो सकता है कि बब्बा ने डी.डी.ए. फ्लैट के लिए पैसा न भर के भयंकर भूल की है। किन्तु 'समहाउ' यशोधर बाबू को किशन दा की यह उक्ति अब भी जँचती है–मूरख लोग मकान बनाते हैं, सयाने उनमें रहते हैं। जब तक सरकारी नौकरी तब तक सरकारी क्वार्टर। रिटायर होने पर गाँव का पुश्तैनी घर बस! गाँव का पुश्तैनी घर टूट-फूट चुका है और उस पर इतने लोगों का हक है कि वहाँ जाकर बसना, मरम्मत की जिम्मेदारी ओढ़ना और बेकार के झगड़े मोल लेना होगा– इस बात को यशोधर जी अच्छी तरह समझते हैं। बच्चे बहस में जब वह तर्क दोहराते हैं तब उनसे कोई जवाब देते नहीं बनता। उन्होंने हमेशा यही कल्पना की थी, और आज भी करते हैं कि उनका कोई लड़का उनके रिटायर होने से पहले सरकारी नौकरी में आ जाएगा और क्वार्टर उनके परिवार के पास बना रह सकेगा। अब भी पत्नी द्वारा भविष्य का प्रश्न उठाए जाने पर यशोधर बाबू इस सम्भावना को रेखांकित कर देते हैं जब पत्नी कहती है, ''अगर ऐसा नहीं हुआ तो? आदमी को तो हर तरह से सोचना चाहिए।'' तब यशोधर बाबू टिप्पणी करते हैं कि सब तरह से सोचने वाले हमारी बिरादरी में नहीं होते हैं। उसमें तो एक तरह से सोचने वाले होते हैं। कहते हैं और कहकर लगभग नकली ही हँसी हँसते हैं।

जितना ही इस लोक की जिन्दगी यशोधर बाबू को यह नकली हँसी हँसने के लिए बाध्य कर रही है। उतना ही वह परलोक के बारे में उत्साही होने का यत्न कर रहे हैं। तो उन्होंने बिड़ला मन्दिर की ओर तेज कदम बढ़ाए, लक्ष्मीनारायण के आगे हाथ जोड़े, असीक का फूल चुटिया में खोंसा और पीछे के उस प्रांगण में जा पहुँचे जहां एक महात्मा जी गीता का प्रवचन कर रहे थे।

अफसोस, आज प्रवचन सुनने में यशोधर जी का मन खास लगा नहीं। सच तो यह है कि वह भीतर से बहुत ज्यादा धार्मिक अथवा कर्मकाण्डी हैं नहीं। हाँ, इस सम्बन्ध में अपने मर्यादा-पुरुष किशन दा द्वारा स्थापित मानक हमेशा उनके सामने रहे हैं। जैसे-जैसे उम्र ढल रही है, वैसे-वैसे वह भी किशन दा की तरह रोज मन्दिर जाने,

सन्ध्या-पूजा करने और गीता प्रेस गोरखपुर की किताबें पढ़ने का यत्न करने लगे हैं। अगर कभी उनका मन शिकायत करता है कि इस सबमें लग नहीं पा रहा हूँ तब उससे कहते हैं कि भाई लगना चाहिए। अब तो माया-मोह के साथ-साथ भगवत भजन को भी कुछ स्थान देना होगा कि नहीं? नई पीढ़ी को देकर राजपाट तुम लग जाओ-बाट-वनप्रदेश की। जो करते हैं, जैसा करते हैं, करें। हमें तो अब इस 'वर्ल्ड' की नहीं, उसकी इस 'लाइफ' की नहीं, उसकी चिन्ता करनी हुई। वैसे अगर बच्चे सलाह मांगे, अनुभव का आदर करें तो अच्छा लगता है। अभी नहीं माँगते तो न माँगे।

यशोधर बाबू ने फिर अपने को झिड़का कि यह भी क्या हुआ कि मन को समझाने में फिर भटक गए। गीता-महिमा सुनो।

सुनने लगे मगर व्याख्या में जनार्दन शब्द जो सुनाई पड़ा तो उन्हें अपने जीजा जनार्दन जोशी की याद हो आई। परसों ही कार्ड आया है कि उनकी तबीयत खराब है। यशोधर बाबू सोचने लगे कि जीजा जी का हाल पूछने अहमदाबाद जाना ही होगा। ऐसा सोचते ही उन्हे यह भी ख्याल आया कि यह प्रस्ताव उनकी पत्नी और बच्चों को पसन्द नहीं आएगा। सारा संयुक्त परिवार बिखर गया है। पत्नी और बच्चों की धारणा है कि इस बिखरे परिवार के प्रति यशोधर जी का एकतरफा लगाव आर्थिक दृष्टि से सर्वथा मूर्खतापूर्ण है। यशोधर जी खुशी-गमी के हर मौके पर रिश्तेदारों के यहाँ जाना जरूरी समझते हैं। वह चाहते हैं कि बच्चे भी पारिवारिकता के प्रति उत्साही हों। बच्चे क्रुद्ध ही होते हैं। अभी उस दिन हद हो गई। कमाऊ, बेटे ने यह कह दिया कि आपको बुआ को भेजने के लिए पैसे मैं तो नहीं दूँगा। यशोधरा बाबू को कहना पड़ा कि अभी तुम्हारे बब्बा की इतनी साख है कि सौ रुपया उधार ले सकें।

यशोधर जी का नारा है, 'हमारा तो पैसा ही ऐसा देखा ठहरा'–हमें तो यही परम्परा विरासत में मिली है। इस नारे से उनकी पत्नी बहुत चिढ़ती हैं। पत्नी का कहना है और सही कहना है, कि यशोधर जी का स्वयं का देखा हुआ कुछ भी नहीं है। माँ के मर जाने के बाद छोटी ही उम्र में वह गाँव छोड़कर अपनी विधवा बुआ के पास अल्मोड़ा आ गऐ थे। बुआ का कोई ऐसा लम्बा-चौड़ा परिवार तो था नहीं जहाँ कि यशोधर जी कुछ देखते और परम्परा के रंग में रंगते। मैट्रिक पास करते ही वह दिल्ली आ गए और यहाँ रहे कुँआरे कृष्णानन्द जी के साथ। कुँआरे की गिरस्ती में देखने को होता क्या है? पत्नी आग्रहपूर्वक कहती है कि कुछ नहीं, तुम अपने उन किशन दा के मुँह से सुनी-सुनाई बातों को अपनी आँखों-देखी यादें बना डालते हो। किशन दा को जो भी मालूम था वह उनका पुराने गँवई लोगों से सीखा हुआ ठहरा। दिल्ली आकर

उन्होंनें घर-परिवार तो बसाया नहीं जो जान पाते कि कौन से रिवाज निभा सकते हैं, कौन से नहीं। पत्नी का कहना है किशन दा तो थे ही जन्म के बूढ़े, तुम्हें क्या सुर लगा जो उनका बुढ़ापा खुद ओढ़ने लगे हो? तुम शुरू में तो ऐसे नहीं थे, शादी के बाद मैंने तुम्हें देख जो क्या नहीं रखा है। हफ्ते में दो-दो सिनेमा देखते थे। हर इतवार भड्डू चढ़ाकर अपने लिए शिकार पकाते थे। गजल गाते थे गजल। गजल हुई और सहगल के गाने।

यशोधर बाबू स्वीकार करते हैं कि उनमें कुछ परिवर्तन हुआ है, लेकिन वह समझते हैं कि उम्र के साथ-साथ बुजुर्गियत आना ठीक ही है। पत्नी से वह कहते हैं कि जिस तरह तुमने बुढ्याकाल यह बगैरह बाँह का ब्लाउज पहनना, यह रसोई से बाहर भात-दाल खा लेना, यह ऊंची हील वाली सैण्डल पहनना, और ऐसे ही पचासों काम अपनी बेटी की सलाह पर शुरू कर दिए हैं, मुझ तो वे 'समहाउ इम्प्रॉपर' ही मालूम होते हैं। 'एनीवे' मैं तुम्हें ऐसा करने से रोक नहीं रहा, 'देयरफोर' तुम लोगों को भी मेरे जीने के ढंग पर कोई एतराज होना नहीं चाहिए।

यशोधर बाबू को धार्मिक प्रवचन सुनते हुए भी अपना पारिवारिक चिन्तन में ध्यान डूबा रहना अच्छा नहीं लगा। सुबह-शाम सन्ध्या करने के बाद जब वह थोड़ा ध्यान लगाने की कोशिश करते हैं तब भी मन किसी परमसत्ता नहीं, इसी परिवार में लीन होता है। यशोधर जी चाहते हैं कि ध्यान लगाने की सही विधि सीखें। साथ ही वह अपने से भी कहते हैं कि 'परहैप्स' ऐसी चीजों के लिए 'रिटायर' होने के बाद का समय ही 'प्रॉपर' ठहरा। वानप्रस्थ के लिए 'प्रेसक्राइब्ड' ठहरीं ये चीजें। वानप्रस्थ के लिए यशोधर बाबू का अपने पुश्तैनी गाँव जाने का इरादा है कि रिटायर होकर। 'फॉर फ्रॉम द मैडिंग क्राउड' -समझे!

इस तरह की तमाम बातें यशोधर बाबू पैदाइशी बुजुर्गवार किशन दा के शब्दों में और उनके ही लहजे में कहा करते हैं और कहकर उनकी तरह की वह झेंपी-सी लगभग नकली-सी हँसी हँस देते हैं। जब तक किशन दा दिल्ली में रहे यशोधर बाबू नित्य नियम से हर दूसरी शाम उनके दरबार में हाजिरी लगाने पहुँचते रहे।

स्वयं किशन दा हर सुबह सैर से लौटते हुए अपने इस मानसपुत्र के क्वार्टर में झाँकना और 'हेल्दी वेल्दी एण्ड वाइज' बन रहा है न भाऊ, ऐसा कहना कभी नहीं भूलते। जब यशोधर बाबू दिल्ली आए थे तब उनकी सुबह थोड़ी देर से उठने की आदत थी। किशन दा ने उन्हें रोज सुबह झकझोरकर उठाने और साथ सैर पर ले जाना शुरू किया और यह मन्त्र दिया कि 'अर्ली टु बेड एण्ड अर्ली टु राइज मेकस ए मैन

हेल्दी वेल्दी एण्ड वाइज' जब यशोधर बाबू अलग क्वार्टर में रहने लगे और अपनी गृहस्थी में डूब गए तब भी किशन दा ने यह देखते रहना जरूरी समझा कि भाऊ यानी बच्चा सवेरे जल्दी उठता है कि नहीं। हर सवेरे वह किशन दा से अनुरोध करते कि चाय पीकर जाएँ। किशन दा कभी-कभी इस अनुरोध की रक्षा कर देते। यशोधर बाबू ने किशन दा को घर और दफ्तर में विभिन्न रूपों में देखा है लेकिन किशन दा की ही जो छवि उनके मन में बसी हुई है वह सुबह की सैर निकले किशन दा की है-कुर्त्ते-पैजामें के ऊपर ऊनी गाउन पहने, सिर पर गोल विलायती टोपी और पाँवों में देशी खड़ाऊ धारण किए हुआ और हाथ में (कुत्तों को भगाने के लिए) एक छड़ी लिए हुए।

जब तक किशन दा दिल्ली में रहे तब तक यशोधर बाबू ने उनके पट्टशिष्य और उत्साही कार्यकर्ता की भूमिका पूरी निष्ठा से निभाई। किशन दा के चले जाने के बाद उन्होंने ही उनकी कई परम्पराओं को जीवित रखने की कोशिश की और इस कोशिश में पत्नी और बच्चों को नाराज किया। घर में होली गवाना, 'जन्यो पुन्यूँ' के दिन सब कुमाऊँनियों को जनेऊ बदलने के लिए अपने घर आमन्त्रित करना, रामलीला की तालीम के लिए क्वार्टर का एक कमरा दे देना-ये और ऐसे ही कई और काम यशोधर बाबू ने किशन दा से विरासत में लिए थे। उनकी पत्नी और बच्चों को इन आयोजनों पर होने वाला खर्च और इन आयोजनों में होने वाला शोर, दोनों ही सख्त नापसन्द थे। बदतर यही कि इस आयोजनों के लिए समाज में भी कोई खास उत्साह रह नहीं गया है।

यशोधर जी चाहते हैं कि उन्हें समाज का सम्मानित बुजर्ग माना जाए, लेकिन जब समाज ही न हो तो यह पद उन्हें क्योंकर मिले? यशोधर जी चाहते हैं कि बच्चे मेरा आदर करें और उसी तरह हर बात में मुझसे सलाह लें जिस तरह मैं किशन दा से लिया करता था। यशोधर बाबू 'डेमोक्रेट' हैं और हरगिज यह दुराग्रह नहीं करना चाहते कि बच्चे उनके कहे को पत्थर की लकीर समझें। लेनिक यह भी क्या हुआ कि पूछा न ताछा, जिसके मन में जैसा आया, करता रहा! 'ग्राण्टेड' तुम्हारी 'नॉलेज' ज्यादा होगी, लेकिन 'एक्सपीरिएन्स' को कोई 'सबस्टिट्यूट' ठहरा नहीं बेटा! मानों न मानो, झूठे मुँह से सही-एक बार पूछ तो लिया करो, ऐसा कहते हैं यशोधर बाबू और बच्चे यही उत्तर देते हैं, बब्बा, आप तो हद करते हैं! जो बात आप जानते ही नहीं आपसे क्यों पूछें?

प्रवचन सुनने के बाद यशोधर बाबू सब्जी मण्डी गए। यशोधर बाबू को अच्छा लगता अगर उनके बेटे बड़े होने पर अपनी तरफ से यह प्रस्ताव करते कि दूध लाना,

राशन लाना, सी.जी.एच. डिस्पेन्सरी से दवा लाना, सदर बाजार जाकर दालें लाना, पहाड़गंज से सब्जी लाना, डिपो से कोयला लाना–ये सब काम आप छोड़ दें, अब हम कर दिया करेंगे। एकाध बार बेटों से खुद उन्होंने कहा, तब वे एक–दूसरे से कहने लगे कि तू किया कर, तू क्यों नहीं करता! इतना कुहराम मचा और लड़कों ने एक–दूसरे को इतना ज्यादा बुरा–भला कहा कि यशोधर बाबू ने इस विषय को उठाना भी बन्द कर दिया। जब से बड़ा बेटा विज्ञापन कम्पनी में बड़ी नौकरी पा गया है, तब से बच्चों का इस प्रसंग में एक ही वक्तव्य है –बब्बा, हमारी समझ में नहीं आता कि इन कामों के लिए आप एक नौकर क्यों नहीं रख लेते? इजा को भी आराम हो जाएगा। कमाऊ बेटा नमक छिड़कते हुए यह भी कहता कि नौकर की तनख्वाह मैं दे दूँगा।

यशोधर बाबू को यही 'समहाउ इम्प्रॉपर' मालूम होता है कि उनका बेटा अपना वेतन उनके हाथ में नहीं रखे। यही सही है कि वेतन स्वयं बेटे के अपने हाथ में नहीं आता, 'एकाउण्ट ट्रान्सफर' द्वारा बैंक में जाता है। लेकिन क्या बेटा बाप के साथ 'ज्वाइण्ट एकाउण्ट' नहीं खोल सकता था? झूठे मुँह से ही सही, एक बार ऐसा कहता तो! तिस पर बेटे का अपने वेतन को अपना समझते हुए बार–बार कहना कि यह काम मैं अपने पैसे से कर रहा हूँ, आपके से नहीं जो नुक्ताचीनी करें। हम क्रम में बेटे ने यह क्वार्टर तक अपना बना लिया है। अपना वेतन अपने ढंग से वह इस घर में खर्च कर रहा है। कभी 'कारपेट' बिछवा रहा है, कभी पर्दे लगवा रहा है। कभी सोफा आ रहा है। कभी 'डनलप' वाला 'डबलबेड' और सिंगार–मेज। कभी टी.वी., कभी फ्रिज। क्या हुआ यह? और ऐसा भी नहीं कहता कि लीजिए पिताजी, मैं आपके लिए टी.वी. ले आया हूँ। कहता यही है कि यह मेरा टी.वी. है, समझे, इसे कोई न छुआ करे। क्वार्टर ही उसका हो गया। यह अच्छी रही। अब इनका एक नौकर भी रखो घर में। इनका नौकर होगा तो इनके लिए ही होगा। हमारे लिए तो क्या होगा–ऐसा समझाते हैं यशोधर बाबू घरवाली को। काम सब अपने हाथ से ही ठीक होते हैं। नौकरों को सौंपा कारबार चौपट हुआ। कहते हैं यशोधर बाबू, पत्नी भी सुनती है, मगर नहीं सुनती। पर सुनकर अब चिढ़ती भी नहीं। सब्जी का झोला लेकर यशोधर बाबू खुदी हुई सड़कों और टूटे हुए क्वार्टर के मलवे से पटे हुए नालों को पार करके 'स्क्वेअर' के उस कोने में पहुँचे जिसमें तीन क्वार्टर अब भी साबुत खड़े हुए थे। उन तीन में से कुल एक को अब तक एक सिरफिरा आबाद किए हुए है। बाहर बदरंग तख्ती में उसका नाम लिखा–वाई.डी.पन्त।

इस क्वार्टर के पास पहुँचकर आज वाई.डी. पन्त को पहले धोखा हुआ कि

किसी गलत जगह आ गए हैं। क्वार्टर के बाहर एक कार थी, कुछ स्कूटर–मोटरसाइकिल। बहुत–से लोग विदा ले दे रहे थे। बाहर बरामदे में रंगीन कागज की झालरें और गुब्बारे लटके हुए थे और रंग–बिरंगी रोशनियाँ जली हुई थीं।

फिर उन्हें अपना बड़ा, बेटा भूषण पहचान में आया, जिससे कार में बैठा हुआ कोई साहब हाथ मिला रहा था और कह रहा था, ''गिव माई वार्म रिगार्ड्स टु योर फादर।''

यशोधर बाबू ठिठक गए। उन्होंने अपने से पूछा–क्यों, आज मेरे क्वार्टर में क्या हो रहा होगा? उसका जवाब भी उन्होंने अपने को दिया–जो करते होंगे यह लौंडे-मौंडे, इनकी माया यही जानें!

अब यशोधर बाबू का ध्यान इस ओर गया कि उनकी पत्नी और उनकी बेटी भी कुछ मेमसाबों को विदा करते हुए बरामदे में खड़ी हैं। लड़की जीन और बगैर बाँह का टॉप पहने है। यशोधर बाबू उससे कई मर्तबा कह चुके हैं कि तुम्हारी यह पतलून और सैण्डो बनैन यानी ड्रेस मुझे तो 'समहाउ इम्प्रॉपर' मालूम होती है। लेकिन वह भी जिद्दी ऐसी है कि इसे ही पहनती है। और पत्नी भी उसी की तरफदारी करती है। कहती है–वह सिर पर पल्लू–वल्लू मैंने कर लिया बहुत तुम्हारे कहने पर, समझे मेरी बेटी वही करेगी जो दुनिया कर रही है। पुत्री का पक्ष लेने वाली यह पत्नी इस समय होंठों पर लाली और बालों पर खिजाब लगाए हुए थी जबकि ये दोनों ही चीजें, आप कुछ भी कहिए, यशोधर बाबू को 'समहाउ इम्प्रॉपर' ही मालूम होती हैं।

आधुनिक किस्म के अजनबी लोगों की भीड़ देखकर यशोधर बाबू अँधेरे में ही दुबके रहे। उनके बच्चों को इसीलिए शिकायत है कि बब्बा तो 'एल.डी.सी. टाइपों से ही 'मिक्स' करते हैं।

जब कार वाले लोग चले गए तब यशोधर बाबू ने अपने क्वार्टर में कदम रखने का साहस जुटाया। भीतर अब भी पार्टी चल रही थी। उनके पुत्र–पुत्रियों के कई मित्र तथा उनके कुछ रिश्तेदार जमे हुए थे। उनके बड़े बेटे ने झिड़की–सुनाई, ''बब्बा, आप भी हद करते हैं। 'सिल्वर वेडिंग' के दिन साढ़े आठ बजे घर पहुँचे हैं। अभी तक मेरे बॉस आपकी राह देख रहे थे।''

''हम लोगों के यहाँ 'सिल्वर वेडिंग' कब से होने लगी? '' यशोधर बाबू ने शर्मीली हँसी हँस दी।

''जब से तुम्हारा बेटा डेढ़ हजार माहवार कमाने लगा, तब से।'' यह टिप्पणी थी

चन्द्रदत्त तिवारी की जो इसी साल 'एस.ए.एस.' पास हुआ है और दूर के रिश्ते से यशोधर बाबू का भानजा लगता है।

यशोधर बाबू को अपने बेटों से तमाम तरह की शिकायतें हैं, लेकिन कुल मिलाकर उन्हें यह अच्छा लगता है कि लोग-बाग उन्हें ईर्ष्या का पात्र समझते हैं। भले ही उन्हें भूषण का गैर-सरकारी नौकरी करना समझ में न आता हो तथापि वह यह बखूबी समझते हैं कि इनती छोटी उम्र में डेढ़ हजार माहवार प्लस कन्वेन्स एलाउन्स एण्ड' तुम्हारा 'अदर वर्क्स' पा जाना कोई मामूली बात नहीं है। इसी तरह भले ही यशोधर बाबू ने बेटों की खरीदी हुई हर नई चीज के सन्दर्भ में यही टिप्पणी की हो कि ये क्या हुई 'समहाउ' मेरी तो समझ में आता नहीं। इसकी क्या जरूरत थी, तथापि उन्हें कहीं इस बात से थोड़ी खुशी भी होती है कि इस चीज के आ जाने से उन्हें नये दौर के, निश्चय ही गलत, मानकों के अनुसार बड़ा आदमी मान लिया जा रहा है। मिसाल के लिए जब बेटों ने गैस का चूल्हा जुटाया तब यशोधर बाबू ने उसका विरोध किया और आज भी वह यही कहते हैं कि इस पर बनी रोटी मुझे तो 'समहाउ' रोटी जैसी लगती नहीं, तथापि वह जानते हैं कि गैस न होने पर इस नगर में चपरासी श्रेणी के मान लिए जाते। इसी तरह फ्रिज के सन्दर्भ में आज भी यशोधर बाबू यही कहते हैं कि मेरी समझ में आज तक यह नहीं आया कि इसका फायदा क्या है। बासी खाना खाना अच्छी आदत नहीं ठहरी। और यह ठहरा इसी काम का कि सुबह बना के रख दिया और शाम को खाया। इसमें रखा हुआ भी मेरे मन को तो भाता नहीं, गला पकड़ लेता है। कहते हैं, मगर इस बात से सन्तुष्ट होते हैं कि घर आए साधारण हैसियत वाले मेहमान इस फ्रिज का पानी पीकर अपने को धन्य अनुभव करते हैं।

अपनी 'सिल्वर वेडिंग' की यह भव्य पार्टी भी यशोधरबाबू को 'समहाउ इम्प्रॉपर' ही लगी तथापि उन्हें इस बात से सन्तोष हुआ कि जिस अनाथ यशोधर के जन्मदिन तक पर कभी लड्डू नहीं आए, जिसने अपना विवाह भी 'कोऑपरेटिव' से दो-चार हजार कर्ज निकालकर किया, बगैरह किसी खास धूमधाम के, उसके विवाह की पच्चीसवीं वर्षगाँठ पर केक, चार तरह की मिठाई, चार तरह की नमकीन, फल, 'कोल्ड ड्रिंक्स', चाय और नजरअन्दाज कैसे करें, व्हिस्की, सब मौजूद हैं।

व्हिस्की की लगभग खाली बोतल को इंगित करते हुए यशोधर बाबू ने पूछा, ''क्यों भूषण, व्हाट इज़ दिस?''

भूषण बोला,''व्हिस्की है, और क्या। मैंने अपने 'बॉस' को, 'कुलीग्स' को 'इनवाइट' किया था। उनको क्या पिलाता, शिकंजी?''

''शिकंजी जहर होती होगी'', यशोधर बाबू ने व्यंग्य किया, ''जब हमारे यहाँ व्हिस्की 'सर्व' करने का कोई 'ट्रेडिशन' ही नहीं ठहरा, तब हमें कोई 'फोर्स' तो क्या कर सकता है? मैं तो कहता हूँ कि यह 'पार्टी' करने की भी क्या जरूरत पड़ गई थी? किसी ने कथा था तुमसे? सवेरे जब मैं गया था तो इसकी कोई बात नहीं थी।''

एक कोने में बैठकर कोला में ढकी हुई व्हिस्की पीता हुआ गिरीश बोला, ''गुनाहगार मैं हूँ जीजा जी। मुझे आज सुबह बैठे-बैठे याद आई कि आपकी शादी छह फरवरी सन् सैंतालीस को हुई थी। और इस हिसाब से आज उसे पच्चीस साल पूरे हो गए हैं। मैंने आपके दफ्तर फोन किया लेकिन शायद आपका फोन खराब था। तब मैंने भूषण को फोन किया। भूषण ने कहा, शाम को आ जाइए, 'पार्टी' करते हैं। मैंने अपने 'बॉस' को भी बुला लूँगा इसी बहाने।''

गिरीश यशोधर बाबू की पत्नी का चचेरा भाई है। बड़ी कम्पनी में 'मार्केटिंग मैनेजर' है और इसकी सहायता से ही यशोधर बाबू के बेटे को विज्ञापन कम्पनी में बढ़िया नौकरी मिली है। यशोधर बाबू को अपना यह सम्पन्न साला 'समहाउ' भयंकर ओछाट यानी ओछेपन का धनी मालूम होता है। उन्हें लगता है कि इसी ने भूषण को बिगाड़ दिया है। कभी कहते हैं ऐसा तो पत्नी बरस पड़ती है-''जिन्दगी बना दी तुम्हारे 'सेकण्ड क्लास' बी.ए. बेटे की, कहते हो बिगाड़ दिया।''

भूषण ने अपने मित्रों-सहयोगियों का यशोधर बाबू से परिचय कराना शुरू किया। उनकी 'मैनी हैप्पी रिटर्न्स ऑफ डे' का 'थैंक्यू' कहकर जवाब देते हुए, जिन लोगों का नाम पहले बता दिया गया हो उनकी ओर 'वाई.डी. पन्त , होम मिनिस्ट्री, भूषण' स फादर' कहकर स्वयं हाथ बढ़ा देने में यशोधर बाबू ने हर क्षण यह बताने की कोशिश की कि भले ही वह सरकारी कुमाऊँनी हैं तथापि विलायती रीति-रिवाज से भी भली-भाँति परिचित हैं। किशन दा कहा करते थे कि आना सब कुछ चाहिए, सीखना हर एक की बात ठहरी, लेकिन अपनी छोड़ना नहीं हुई। टाई-सूट पहनना आना चाहिए लेकिन धोती-कुर्ता अपनी पोशाक है यह नहीं भूलना चाहिए।

अब बच्चों ने एक और विलायती परम्परा के लिए आग्रह किया-यशोधर बाबू अपनी पत्नी के साथ 'केक' काटें। घरवाले पहली थोड़ा शरमाई लेकिन जब बेटी ने हाथ खींचा तब उसे 'केक' के पीछे जा खड़ा होने में कोई हिचक नहीं हुई, वहीं से उसने पति को भी पुकारा।

यशोधर बाबू को 'केक काटना' बचकानी बात मालूम हुई। बेटी उन्हें लगभग

खींचकर ले गई। यशोधर बाबू ने कहा, ''समहाउ आई डॉण्ट लाइक ऑल दिस'', लेकिन 'एनीवे' उन्होंने केक काट ही दिया। गिरीश ने उनकी यह अनमनी किंतु सन्तुष्ट छवि कैमरे में कैद कर ली। अब पत्नी-पति से कहा गया कि वे 'केक' से मुँह मीठा करें एक-दूसरे का। पत्नी ने खा लिया मगर यशोधर बाबू ने इन्कार कर दिया। उनका कहना था कि मैं केक खाता नहीं, इसमें अण्डा पड़ा होता है। उन्हें याद दिलाया गया कि अभी कुछ वर्षों पहले तक आप मांसहारी थे, एक टुकड़ा 'केक' खा लेने में क्या हो जाएगा? लेकिन वह नहीं माने। तब उनसे अनुरोध किया गया कि लड्डू ही खा लें। भूषण के एक मित्र ने लड्डू उठाकर मुँह में ठूँसने का यत्न किया। लेकिन यशोधर बाबू इसके लिए भी राजी नहीं हुए। उनका कहना था कि मैंने अब तक सन्ध्या नहीं की है। इस पर भूषण ने झुंझलाकर कहा, ''तो बब्बा, पहले जाकर सन्ध्या कीजिए। आपकी वजह से हम लोग कब तक रुके रहेंगे।''

''नहीं-नहीं, आप सब लोग खाइए'', यशोधर बाबू ने बच्चों के दोस्तों से कहा, ''प्लीज, गो अहेड, नो फॉरमैल्टी।''

यशोधर बाबू ने आज पूजा में कुछ ज्यादा ही देर लगाई। इतनी देर कि ज्यादातर मेहमान उठकर चले जाएँ।

उनकी पत्नी, उनके बच्चे बारी-बारी आकर झाँकते रहे और कहते रहे- ''जल्दी कीजिए, मेहमान जा रहे हैं।''

शाम की पन्द्रह मिनट की पूजा को लगभग पच्चीस मिनट तक खींच लेने के बाद भी जब बैठक से मेहमानों की आवाजें आती सुनाई दीं तब यशोधर बाबू पद्मासन साधकर ध्यान लगाने बैठ गए। वह चाहते थे कि उन्हें प्रकाश का एक नीला बिन्दु दिखाई दे, मगर उन्हे किशन दा दिखाई दे रहे थे।

यशोधर बाबू किशन दा से पूछ रहे थे कि 'जो हुआ हेागा' से आप कैसे मर गए? किशन दा कह रहे थे कि भाऊ, सभी जन इसी, जो हुआ होगा, से मरते हैं। गृहस्थ हों, ब्रह्मचारी हों, अमीर हों, गरीब हों, मरते 'जो हुआ होगा' से ही हैं। हाँ-हाँ, शुरू में और आखिर में, सब अकेले ही होते हैं, अपना कोई नहीं ठहरा दुनिया में, बस एक नियम अपना हुआ।

यशोधर बाबू ने पाजामा-कुर्ता पर ऊनी ड्रेसिंग गाउन पहने, सिर पर गोल विलायती टोपी, पाँवों में देशी खड़ाऊँ और हाथ में डण्डा धारण किए इस किशन दा से अकेलेपन के विषय में बहस करनी चाही, उनका विरोध करने के लिए नहीं बल्कि बात कुछ

और अच्छी तरह समझने के लिए।

हर रविवार किशन दा शाम को ठीक चार बजे यशोधर बाबू के घर आया करते थे। उनके लिए गरमागरम चाय बनवाई जाती थी। उनका कहना था कि जिसे फूँक मारकर न पीना पड़े वह चाय कैसी। चाय सुड़कते हुए किशन दा प्रवचन करते थे और यशोधर बाबू बीच-बीच में शंकाएँ उठाते थे।

यशोधर बाबू को लगता है कि किशन दा आज भी मेरा मार्गदर्शन कर सकेंगे और बता सकेंगे कि मेरी बीवी-बच्चे जो कुछ भी कर रहे हैं उसके विषय में मेरा रवैया क्या होना चाहिए?

लेकिन किशन दा तो वही अकेलापन का खटराग अलापने पर आमादा से मालूम होते हैं।

कैसी बीवी, कहाँ के बच्चे। यह सब माया ठहरी और यह जो भूषण तेरा आज इतना उछल रहा है वह भी किसी दिन इतना ही अकेला और असाहय अनुभव करेगा जितना कि आज तू कर रहा है।

यशोधर बाबू बात आगे बढ़ाते लेकिन उनकी घरवाली उन्हें झिड़कते हुए आ पहुंची कि क्या आज पूजा में ही बैठे रहोगे? यशोधर बाबू आसन से उठे और उन्होंने दबे स्वर में पूछा ''मेहमान गए?'' पत्नी ने बताया, ''कुछ गए, कुछ हैं।'' उन्होंने जानना चाहा कि कौन-कौन हैं? आश्वस्त होने पर कि सभी रिश्तेदार ही हैं वह उसी लाल गमछे में बैठक में चले गए जिसे पहनकर वह सन्ध्या पर बैठे थे। यह गमछा पहनने की आदत भी उन्हें किशन दा से विरासत में मिली है और उनके बच्चे इसके सख्त खिलाफ हैं।

''एवरीबडी गॉन, पार्टी ओवर?'' यशोधर बाबू ने मुस्कराकर अपनी बेटी से पूछा, अब गोया गमछा पहने रहा जा सकता है?

उनकी बेटी झल्लाई-''लोग चले गए इसका मतलब यह थोड़ी है कि आप गमछा पहनकर बैठक में आ जाएँ। बब्बा , 'यू आर द लिमिट'।''

''बेटी, हमें जिसमें सज आयेगी वहीं करेंगे ना, '' यशोधर बाबू ने कहा, ''तुम्हारी तरह जीन पहनकर हमें तो सज आती नहीं।''

यशोधर बाबू की दृष्टि मेज पर रखे कुछ पैकटों पर पड़ी। बोले, ''ये कौन भूले जा रहा है?''

भूषण बोला, ''आपके लिए 'प्रेजेण्ट' हैं, खोलिए ना।''

''अह, इस उम्र में क्या हो रहा 'प्रेजेण्ट-व्रीजेण्ट! ' तुम खोलो, तुम्हीं इस्तेमाल करो।'' यशोधर बाबू शर्मीली हँसी हँसे।

भूषण सबसे बड़ा पैकेट उठाकर और उसे खोलते हुए बोला, ''इसे तो ले लीजिए। यह मैं आपके लिए लाया हूँ। ऊनी 'ड्रेसिंग गाउन' है। आप सवेरे जब दूध लेने जाते हैं बब्बा, फटा 'प्लोवर' पहन के चले जाते हैं जो बहुत ही बुरा लगता है। आप इसे पहन के जाया कीजिए।''

बेटी पिता का पाजामा-कुर्ता उठा लाई कि इसे पहनकर गाउन पहनें।

थोड़ा-सा ना-नुच करने के बाद यशोधर जी ने इस आग्रह की रक्षा की। 'गाउन' का 'सैश' कसते हुए उन्होंने कहा, ''अच्छा तो यह ठहरा 'ड्रेसिंग गाउन'।'' उन्होंने कहा और उनकी आँखों की कोर में जरा-सी नमी चमक गई।

यह कहना मुश्किल है कि इस घड़ी उन्हें यह बात चुभ गई कि उनका जो बेटा यह कह रहा है कि आप सवेरे यह 'ड्रेसिंग गाउन' पहनकर दूध लाने जाया करें, वह यह नहीं कर रहा है कि दूध मैं ला दिया करूंगा या कि इस गाउन को पहनकर उनके अंगों में वह किशन दा उतर आया है जिसकी मौत 'जो हुआ होगा' से हुई।

मनोहर श्याम जोशी

जन्म : 9 अगस्त, 1933

प्रमुख कृतियाँ : कुरु कुरु स्वाहा, कसप, हरिया हर्क्यूलिस की हैरानी, क्याप (उपन्यास) लखनऊ मेटा लखनऊ, कक्काजी कटिम दिवंगत

रमज़ान में मौत

–मंजूर एहतेशाम

असद मियाँ की आँखें बन्द थीं। एक पल के लिए मैंने सोचा , वापिस चला जाऊँ। दूसरे ही पल असद मियाँ आँखें खोले देख रहे थे। उन आँखों में कोहरा भरी सुबह-सी रोशनी थी।

-खुदा के लिए अयाज़...सीना दर्द से टूटा जा रहा है।

सुहेला भाभी आइने के सामने खड़ी हुई डैबिंग करके चेहरे के धब्बे मिटा रही थीं। कमरे में जलते हुए बल्ब की रोशनी धीरे-धीरे बाहर फैलते अँधेरे के साथ उभरने लगी थी। सूरज डूबने में कुछ और देर थी।

-जमील! अरे, जमील! सुहेला भाभी ने आवाज़ दी।

असद मियाँ के पलंग की चादर सफ़ेद थी। पलंग के नीचे दो फटी हुई चप्पलों में उलझी हुई एक सलाबची थी, जिसे शायद वह पिछले कई घंटों से लगातार इस्तेमाल करते रहे थे। उनके पैर गन्दे और एड़ियों की खाल चटख़ी हुई थी। बिस्तर पर चादर का वह हिस्सा जहाँ उनके पैर थे, दाग़दार हो चुका था।

-ज़फर भाई आ रहे हैं, मैंने असद मियाँ से आँखें बचाते हुए कहना चाहा, लेकिन फिर मैंने देखा आँखें तो वो ख़ुद ही बन्द कर चुके थे। सुहेला भाभी ने मज़ाक उड़ाती हुई-सी नज़रों से मेरी तरफ़ देखा और फिर आवाज़ देने लगीं-जमील... अरे, कहाँ ग़ारत हो गया?

-अरे, आ रहा हूँ। कहीं बाहर से आवाज़ आई।